Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XI, Issue No. 22, July-2016, ISSN 2230-7540

रमल शास्त्र में विविध गृह से विचारनीय विवेचन

डॉ. राजकुमार तिवारी*

(ज्योतिष मार्तण्ड) एमए. पीएच.डी. (ज्योतिष विज्ञान) एम.एससी. (वनस्पति विज्ञान) बी.एड., एलएल.बी.

----------X----------

विविध गृह से विचारणीय विषय विवेचन –

विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए ज्योतिषशास्त्र के आचार्यों ने जिस प्रकार जन्म कुण्डली के द्वादश भावों से समस्त विषयों का विचार करने का निर्देश किया है, उसी प्रकार रमलशास्त्रवेत्ताओं ने भी द्वादश भावों से समस्त विषयों का विचार करने का निर्देश दिया है। अन्तर इतना है कि रमलशास्त्र के सोलह गृहों में से आरम्भ के केवल बारह गृहों (भावों)से समस्त विषयों का विचार किया जाता है। पूर्व में कहा जा चुका है कि ज्योतिषशास्त्र और रमलशास्त्र का घनिष्ठ सम्बन्ध है यह बात यहाँ पर भी विविध भावों से विचारणीय विषय से सिद्ध होती है कहीं-कहीं कुछ बातों में भिन्नता दिखाई देती है। उसका यथास्थान उल्लेख करेंगे। जीवन, आयु, जन्मस्थान, जन्मस्थान की परिस्थितियाँ, बल, कार्य का आरम्भ, सामर्थ्य, शीलता, मुख से वाणी तथा वर्णों के उच्चारण, राजनीति, धर्मनीति, शान्ति आदि का विचार किया जाता है।

पराशर के अनुसार प्रथम भाव से शरीर, रूप, ज्ञान, वर्ण, बल-निर्बल, शीलस्वभाव और प्रकृति का विचार करना चाहिए।

वैद्यनाथ ने प्रथम भाव का विचार करते हुए कहा है कि लग्न से जातक के शारीरिक गणन, वर्ण, आकृति, लक्षण, यश, गुण, स्थान, सुख, प्रवास, तेजस्वीता, दौर्बल्य आदि का विचार करना चाहिए।

रमलनवरत्न में द्वितीय गृह से विचारणीय विषयों का वर्णन करते हुए कहा गया है। कि द्वितीय गृह से धन, धनार्जन में सहायक लोग एवं साधन, सहकर्मी, आजीविका, आगमन, उद्यम, क्रय-विक्रय, व्यापार, धनी-निर्धन, साहुकार, कृपण आदि का विचार करना चाहिए।

पराशर के अनुसार द्वितीय भाव से धनधान्य, कुटुम्ब, शत्रु, धातु, रत्न आदि का विचार किया जाता है।

वैद्यनाथ ने द्वितीय भाव का विचार करते हुए कहा है कि द्वितीय भाव से जातक के धन, नेत्र, सुख, विद्या, वाक शक्ति, कुटुम्ब और भोजन का विचार करना चाहिए।

रमलशास्त्र में तृतीय भाव से विचारणीय विषयों को बताते हुए कहा है कि इस भाव से भाईयों, बंधुओं, बहनों, स्वप्न, नींद, शयन, समीप की यात्रा अथवा निकट के लोगों से भेंट, शरीर, कम्पन, सेवक, नौकर-चाकर, स्वधर्माचरण, देवालय, धर्मकृत्य एवं पराक्रम का विचार करना चाहिए।

पाराशर के अनुसार तीसरे भाव से नोकर, भाई, उपदेश, यात्रा और पिता के मरण का विचार करना चाहिए।

वैद्यनाथ ने तृतीय भाव के संबंध में बताते हुए कहा है कि इस भाव से जेष्ठ एवं कनिष्ठ भ्राता, पराक्रम और साहस, कण्ठ स्वर, कर्ण आभूषण, वस्त्र, धैर्य, बल और भोजन आदि इन सब का विचार करना चाहिए।

रमलशास्त्र में चतुर्थ भाव से खेती, भुखण्ड, आवास, ग्राम आदि में निवास भूमीगत धन, जल आदि उद्यान, वृक्षारोपण, कब्रिस्तान, कार्यों का परिणाम, पिता की स्थिति आदि से संबंधित प्रश्नों का विचार किया जाता है।

पाराशर के अनुसार चतुर्थ भाव से वाहन, बंधुओं का, मातृ सुख का, निधि (गड़े धन) क्षेत्र (खेत), गृह का विचार किया जाता है।

वैद्यनाथ के अनुसार चतुर्थ भावन से विद्या, माता, सुख, सुगंध, गौधन, बन्धु, मन, गुण, वाहन, भूसम्पत्ती, भवन आदि का विचार करना चाहिए।

रमलशास्त्र में पंच्चम भाव से विचारणीय विषय इस प्रकार बताए गए है। पुत्र, हर्षदायक समाचार, दूत, प्रेषित का आगमन, कुशल क्षेम, प्रेम पत्र, स्नेह वार्ता, वस्त्र, प्रसन्नता, विद्या, मनोरंजन, चमत्कार, शुभाशुभ फल, गर्भ की कुशलता, बुद्धि की मलीनता, निर्मलता, पैतृक धन, मादक वस्तु आदि से संबंधित प्रश्नों का विचार पंच्चम भाव से करना चाहिए।

पराशर के अनुसार पंच्चम भाव से यंत्र, मंत्र, विद्या, बुद्धि, प्रबंध, पुत्र, पिता, बुद्धि और पुण्य का विचार करना चाहिए।

रमलशास्त्र के अनुसार छठे भाव से विचारणीय विषय इस प्रकार है। रोग, अपयश, दास-दासी, चिंता-शोक, गर्भ, छोटे शरीर वाले पशु, ऋण का लेन-देन, चोर आदि से अपहृत धन, डकैती, धोखा, छल, प्रपच्च आदि से धन हानि, संतोष, शत्रु आदि से संबंधित प्रश्नों का विचार करना चाहिए।

पराशर के अनुसार छठें भाव से मामा के मरण की शंका का, शत्रु और ब्रण का तथा सौतेली माँ का विचार करना चाहिए।

www.ignited.in

वैद्यनाथ के अनुसार छठें भाव से रोग, शत्रु, व्यसन और चोट का विचार करना चाहिए।

रमलशास्त्र में सप्तम गृह से पत्नियों, पतियों, शत्रु की चुनौती का स्वीकार करना, साझेदारी का उद्यम, चोर, मुकदमा, युद्ध, लड़ाई, प्रवासी का लौटना, दूसरी जगह रखे हुए धन, जीत, हार, मैथुन, प्रेम-प्रसन्ग, स्वदेश तथा विदेश की यात्रा इन सबाक विचार सातवें गृह से किया जाना चाहिए।

पराशर के अनुसार सप्तम भाव से स्त्री, मार्ग, यात्रा, व्यापार, नष्ट वस्तु और मृत्यु का विचार करना चाहिये।

वैद्यनाथ के अनुसार यात्रा, पुत्र, स्त्री (पत्नी) समस्त सुख पूर्व कथित संतान के सुख-दुःख आदि को सप्तम भाव में भी विचार करना चाहिए।

रमलशास्त्र के अनुसार अष्टम भाव से भय, मृत्यु, शोक, चिंता, दुर्गति, आपत्ति, संकट, ऋण देना, क्लेश, अनीति, अधर्म, अन्यायोपार्जित धन, मीरास (वह भूमि आदि या सम्पत्ति जो किसी को गुजारे के लिए शासन, धनी व्यक्ति आदि के द्वारा दी जाती है।), नष्टधन, गड़ा धन, मृतक का धन, पर्वत, कंदरा, दुर्गमस्थान, दुर्ग आदि में प्रवेश तथा आलस्यादि से संबंधित प्रश्नों का विचार अष्टम भाव से करते हैं।

पराशर के अनुसार अष्टम भावन से ऋण देना-लेना, गुदा की बीमारी, पूर्वजन्म और जन्म का विवरण ये सब विचार करना चाहिये।

रमलशास्त्र के अनुसार नवम भाव से धर्मकार्य,आध्यात्मिक चेतना, नैतिकता, व्यभिचार, अतिदूर की यात्रा, पृच्छक का भाग्योदय, दान, स्वप्न, विद्या, अभीष्ट इष्टदेव की पूजा-अर्चना, सन्यास, वैराग्य, मठ, देवालयादि में निवास, निक्षेपित धन, धर्मकार्य हेतु अक्षय निधि की स्थापना आदि का विचार नवम भाव में करना चाहिए।

पराशर के अनुसार नवम भाव से भाग्य, साला, भाई की स्त्री, तीर्थ यात्रा आदि का विचार करना चाहिये।

वैद्यनाथ के अनुसार नवम भाव से मनुष्यों के भाग्य, प्रभाव गुरू, धर्म, तपश्चार्यादि और शुभ फलों का विचार नवम भाव और बृहस्पति से करना चाहिए।

रमलशास्त्र के अनुसार दशम भाव से राज्याधिकार, पैतृक अधिकार (उत्तराधिकार), राजनैतिक तथा प्रशासनिक सफलता, उन्नति, ख्याति, यश, श्रेष्ठता, समाज में पूज्यता, राजबल, सैन्यादि बल, उद्यम, औषधि, गुरू, माता की सेवा, यन्त्र-मन्त्र की सफलता, अपनी जाति में सम्मान की प्राप्ति तथावैद्य से सफलता की प्राप्ति आदि प्रश्नों का विचार दशम भाव से किया जाता है।

पराशर के अनुसार दशम भाव से राज्य, आकाशवृत्ति, प्रतिष्ठा, पिता, आदि का विचार करना चाहिये।

वैद्यनाथ के अनुसार दशम भाव से प्रशासनिक क्षमता, मान-सम्मान, वैभव, वस्त्र, व्यापार, निद्रा, कृषि प्रव्रज्या, आगम, कर्म, जीवन व्यवस्था, ज्ञान और विद्या आदि का विचार किया जाता है।

रमलशास्त्र के अनुसार ग्यारहवें भाव से मित्रों की बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह, परामर्शदाताओं का उत्तम परामर्श, सात्विक तथा आप्तपुरूषों का उपदेश, अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति, आशा का तथा मनोरथों का सफल होना, भाग्योदय होना, राजा या विशिष्ट व्यक्ति के परामर्शदाता का पद प्राप्त होना, न्यायाधीश पद, वकालत, पंच्चफैसला आदि की क्षमता, प्रशंसापत्रादि तथा प्रमाणपत्रों की प्राप्ति, सत्यासत्य का निर्णय-इन सबसे संबंधित प्रश्नों का विचार ग्यारहवें भाव में करना चाहिए।

पराशर के अनुसार एकादश भाव से अनेक वस्तुओं की प्राप्ति, पुत्र, स्त्री, पशुओं की वृद्धि तथा लाभ आदि का विचार करना चाहिए।

रमलशास्त्र के अनुसार बारहवें भाव से बैल आदि बड़े पशुओं (गाय, भैंस, साँड़, भैंसा, घोड़े, हाथी, ऊँट आदि) का बंधन, पृच्छक का बंधन, शत्रु के कारागृह, ऋण से मुक्ति, कारावास या अन्य बंधन में पड़े हुए व्यक्ति की मुक्ति, व्यय, हानि, खर्च, बाधाओं से मुक्ति इन सबसे संबंधित प्रश्नों का विचार बारहवें घर में किया जाना चाहिए।

पराशर के अनुसार बारहवें भाव से व्यय, शत्रु का वृत्तान्त आदि का विचार करना चाहिए।

वैद्यनाथ के अनुसार द्वादश भाव से सुदुर देश की यात्रा, कष्ट, दानशीलता, वैभव, शयनादि सुख, धन नाश आदि का विचार करना चाहिए।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ज्योतिष ग्रन्थों और रमलशास्त्र में भावों (गृह) से विचारणीय विषयों में बहुत समानता है। यह समानता इनके आधारभूत संबंध और एकता को अभिव्यक्त करती है। विचार की शैली और साधन चाहे भिन्न हो किन्तु विचारणीय विषय जन्म कुण्डलीगत भावों के अनुसार समान है।

Corresponding Author

डॉ. राजकुमार तिवारी*

(ज्योतिष मार्तण्ड) एमए. पीएच.डी. (ज्योतिष विज्ञान) एम.एससी. (वनस्पति विज्ञान) बी.एड., एलएल.बी.

E-Mail – Suprbhatsw@gmail.com